04 / 10 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

संकल्प शक्ति के महत्व का अनुभव

➢➢ मैं दिव्य फरिश्ता हूँ

➳_ ➳ सूक्ष्म वतन में हूँ

➳_ ➳ सामने खड़े हैं बापदादा

➳_ ➳ अति दिव्य, तेजस्वी फ़रिश्ता

➳_ ➳ बापदादा के नयनो से

→ किरणें निकल कर मुझ फ़रिश्ते पर पड़ रही हैं

→ मैं फ़रिश्ता इन किरणों के

- प्रकाश में नहा रहा हूँ

→ बाबा की ये दिव्य किरणें

- मुझे अपने संपन्न स्वरूप का
- सम्पूर्ण स्वरुप का
- शक्तिशाली स्थिति का अनुभव करा रही हैं

▶ इस स्थिति में बहुत सुखद अनुभूति हो रही हैं

→ मैं सदा मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ

→ मास्टर ज्ञान सागर हूँ

→ सर्व गुणों में संपन्न हूँ

- हर संकल्प में
- हर श्वास में
- हर सेकंड द्वारा

▶ साक्षी दृष्टा स्थिति का

▶ बाप के साथीपन का अनुभव कर रही हूँ

→ ब्राह्मण परिवार की श्रेष्ठ आत्माओं का

- मुझे स्नेह मिल रहा है
- वे सहयोगी बन रही हैं

➢➢ मैं दिव्य बुद्धि से संपन्न हूँ

➳_ ➳ बाबा से मुझे रूहानी दिव्य दृष्टि का

→ वरदान मिला है

→ इससे मैं सहज ही आत्मिक स्थिति में

- स्थित हो रही हूँ

→ सभी को आत्मिक स्वरुप में देख रही हूँ

→ मेरा शरीर का भान खत्म हो रहा है

→ सिवाय आत्मा के कुछ दिखाई नहीं दे रहा है

- मैं आत्मा ही चल रही हूँ
- मैं आत्मा ही सारे काम कर रही हूँ
- सदा मस्तक मणि को ही देख रही हूँ

→ इस स्थिति में मेरी भाषा

- श्रेष्ठ संकल्प की भाषा है
- मैं अपने श्रेष्ठ जीवन के दर्पण से
  - सहज ही स्वरुप का अनुभव करवा रही हूँ

→ संकल्प शक्ति से सहज ही

- सभी कार्य सिद्ध हो रहे हैं
- मैं सिद्धि स्वरुप
- सफलता का सितारा बन रही हूँ

→ मेरे रूहानी नयन

→ मेरी रूहानी मूर्त

→ ऐसा दिव्य दर्पण बन रही है

- जिसमे हर आत्मा अपने
  - आत्मिक स्वरुप को देख रही है
  - बाप की तरफ आकर्षित हो रही हैं
  - अहो प्रभु के गीत गा रही हैं
  - उनका देह भान खत्म हो रहा है

→ मैं महादानी आत्मा हूँ

→ वरदानी मूर्त हूँ

- सभी को अनुभव का दान दे रही हूँ
  - इससे आधाकल्प के लिए
  - गायन और पूज्य बन रही हूँ
  - भक्ति में अपने यादगार को
  - अपनी महिमा को देख रही हूँ

→ संकल्प के खजाने के महत्व को जान

- श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति जमा कर रही हूँ
- मैं अपने संपन्न दर्पण द्वारा
  - सर्व को उनका निजी स्वरुप दिखा रही हूँ

→ संकल्प शक्ति द्वारा

- सर्व की श्रेष्ठ कामनाएं पूरी कर रही हूँ
- बाप को प्रत्यक्ष कर रही हूँ

- मैं पुन्य आत्मा हूँ
- सर्व शक्तियों की वरदानी मूर्त हूँ